उपसंहार

आजकल समाज हो या साहित्य, हर जगह 'नारी' की ही धूम मची हुई है। जहाँ देखो वहाँ 'नारी विमर्श', 'नारीवाद' और 'नारी आंदोलन' आदि विषयों पर जंग छिड़ी हुई है। नारी मनुष्य होने पर भी 'पुरुष' से सदा अलग रखी गई है। आश्चर्य है, हम कभी वायु, जल, पृथ्वी, तेज और आकाश इन पंचभूतों को कभी जूदा न कर सकें, तो क्यों हम नारी को मनुष्य जाति से अलग करना चाहते है ? आधुनिक दौर में मनुष्य की पूरी जिंदगी ही बदल गई है। उसके चाल-ढाल, संस्कार तथा रीति-रिवाजों के साथ ही, उसकी परंपरागत मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हुआ है। आज चारो ओर 'नारी' का ही बोलबाला है। आज नारी ने अपनी अलग पहचान बनाई है तथा वह पुरुष की बराबरी का स्थान प्राप्त कर चुकी है। साहित्य में हमेशा मनुष्य के सतरंगी जीवन के दर्शन होते हैं। तो फिर मानव समाज में आए नारी आंदोलन रूपी बड़े बदलाव से साहित्य अछूता कैसे रह सकता है भला ! साहित्य में भी 'नारी-जीवन' का अंकन प्रमुखता से होने लगा। हिन्दी साहित्य में भी अनेक आधुनिक साहित्यकारों ने नारी के विभिन्न रूपों को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है।

इस शोध-प्रबंध में निम्न लिखित विशेषताएँ प्रस्तुत हुई है - भारतीय साहित्य में नारी, हिन्दी उपन्यास में नारी, जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व-कृतित्व, प्रसाद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय, प्रसाद के उपन्यासों में नारी पात्र वर्गीकरण तथा नारी पात्रों का अंतः बाह्य चित्रण आदि। इनका विश्लेषण निष्कर्ष इसप्रकार है -

विश्वभर के साहित्य में 'भारतीय साहित्य' अपना श्रेष्ठ स्थान रखता है। भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है - उसकी बृहद्ता और मौलिकता। भारतीय साहित्य में नारी चित्रण के अनेक पहलुओं के दर्शन होते हैं। आदिकालीन साहित्य में नारी 'देवी-रूप' में पूजनीय थी। मध्यकाल में एक ओर तो नारी पुरुष के हाथों का खिलौना बनकर रह गई थी, तो दूसरी ओर नारि युद्धभूमि में शौर्य एवं साहस से शत्रु को लोहा मनवाते हुए नजर आती है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण हुआ है। जैसे-जैसे समाज में बदलाव आता गया, वैसे-वैसे नारी की भूमिकाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आता गया। आधुनिक नारी स्वतंत्र एवं स्वच्छन्दता की माँग कर रही है। नारी की यह मुक्ति की माँग उसके 'नारित्व' की शक्ति को बढ़ावा देती है। वास्तव में नारी नर की ही तरह शक्तिशाली होती है। नर-नारी में हमेशा ही तुलना होती आई है। नारी-नर में जैविकिय भिन्नता होने पर भी दोनों आपसी सहयोग के साथ 'सृष्टि' का संचलन करते है; साथ ही वह मनुष्य

जाति की वृद्धि एवं विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। इस संपूर्ण प्रक्रिया में नारी अपनी जिम्मेदारियों का संपूर्णतः से निर्वाहन करती है। इस प्रकार नारी ने समाज में अपना 'अविचल स्थान' बनाए रखा है।

'नारी के इस बहुगुणी व्यक्तित्व ने हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया। हिन्दी उपन्यास में 'नारी' का विस्तृत वर्णन हुआ है। प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास में 'नारी' के सीमित रूपों के ही दर्शन होते है। तथापि प्रेमचन्द युग ने नारी जीवन की किताब के हर पन्ने को खोलकर रख दिए है। इस युग के उपन्यास साहित्य में नारी के सामान्य से लेकर आदर्श रूप तक अनेक रूपों को स्पष्ट किया गया है। प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी साहित्य तो 'नारी आंदोलन' में अपना अलग महत्त्व रखता है। इस युग के साहित्य में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास के सारे आयामों की चर्चा की गई है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में 'नारी' के सर्वांग पक्ष का बखुबी चित्रण किया गया है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में प्रेमचन्द के समकालीन एक महान साहित्यकार का उदय हुआ; उनका नाम है 'जयशंकर प्रसाद'। प्रसाद का संपूर्ण व्यक्तित्व उनकी हर साहित्य कृतियों का प्रेरणास्त्रोत बनकर सामने आया है। उनके व्यक्तिगत जीवन ने तथा पारिवारिक विषम स्थितियों ने उनकी वृत्ति में वैराग भर दिया और इसी का परिपाक हमें उनके साहित्य में दिखाई देता है। अत्यंत गुणसंपन्न चरित्र के धनि प्रसाद का कृतित्व भी हिन्दी साहित्य में अपनी श्रेष्ठता रखता है। उनकी लेखनी से उतरी हर एक कृति ने साहित्य एवं समाज का दिशा-दिग्दर्शन किया है। प्रसाद ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में विचरण किया है। इनका काव्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानी आदि साहित्य बहुश्रुत है। इनकी 'कामायनी' काव्य रचना 'आधुनिक महाकाव्य' है। प्रसाद ने अपने साहित्य में 'नारी' विषयपर अपनी चिंतनशील प्रवृत्ति को प्रकट किया है। 'नारी-विमर्श' में प्रसाद के साहित्य का अग्रणी स्थान है।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के एक संवेदनशील रचनाकार है। उन्होने 'नारी-जीवन' को नई दृष्टि प्रदान की है। वास्तव में प्रसाद ने नारी का मूल्य पहचाना है और अपने साहित्य में उसकी महत्ता का बखान किया है। प्रसाद अपने साहित्य में नारी के प्रति स्वस्थ एवं संतुलित दृष्टिकोण के लिए सदा आग्रहित रहे है। प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यास हिन्दी साहित्य में एक ऊँचाई प्राप्त कर चुके हैं। इन उपन्यासों में 'समग्र नारी संसार' के दर्शन होते है। प्रसाद ने अपने उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हुए उसके आदर्श-रूप का समर्थन किया है। प्रसाद के उपन्यासों में आई नारी चाहे वह पाश्चात्य हो या भारतीय, ग्रामीण हो या शहरी, सभी नारी रूप में आदर्श की प्रतिस्थापना हुई है। इसीकारण प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन को विस्तार से जानना आवश्यक हो जाता है।

प्रसाद के उपन्यास जगत में हर एक नारी-पात्र अपना एक अलग महत्त्व है। इनके नारी-पात्रों में 'संपूर्ण नारी' के दर्शन होते है। इन उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्रों ने अपनी 'जीवन-साधना' से अन्य-पात्रों का जीवनोद्धार

किया है। उदा. 'कंकाल' उपन्यास की 'तारा' ने अपना संपूर्ण जीवन अनाथ एवं पीड़ित लोगों की सेवा में व्यतीत किया है। प्रसाद ने 'तारा' के माध्यम से नारी में 'आदर्श' को प्रतिस्थापित करके उसके महान व्यक्तित्व की प्रशंसा की है। 'तितली' उपन्यास की 'तितली' भी हमारे सामने एक 'आदर्श भारतीय नारी' के रूप में प्रस्तुत हुई है। तितली का संपूर्ण जीवन ही आदर्शता की मिसाल है। वह आदर्श नारी का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। प्रसाद के उपन्यास के प्रमुख नारी-पात्र तारा, किशोरी, शैला, तितली, इरावती हो; या गाला, माधुरी, नन्दरानी जैसे गौण पात्र हो। इन नारी पात्रों दूवारा प्रसाद ने उनमें अंतर्भूत विभिन्न पहलूओं को दिखाकर उनके गुणों का बखान किया है।

नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। प्रसाद ने अपने उपन्यास में नारी के सामाजिक रूपों का प्रभावी रूप से चित्रण किया है। प्रसाद ने नारी के पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा, वेश्या आदि रूपों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। प्रसाद के उपन्यास में पत्नी रूपा नारी में 'नन्दरानी', 'लतिका' (कंकाल) आदि नारी पात्रों में 'आदर्श पत्नी-रूप' में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास में नारी का 'प्रेमिका-रूप' अत्यंत मनोहारी बन पड़ा है। उनके उपन्यास की 'तारा', 'तितली' तथा 'इरावती' आदि नारी पात्रों ने सर्वोच्च प्रेम का आदर्श प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास में 'माता-रूप' में चित्रित किशोरी, श्यामदुलारी आदि पात्रों में ममत्त्व भाव है। इस प्रकार प्रसाद ने नारी के हर आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है।

प्रसाद के उपन्यास में चित्रित नारी परंपरावादी तथा विद्रोही दोनों परस्पर भिन्न वैचारिकता का प्रतिनिधित्त्व करती है। तो दूसरी ओर कुछ नारियाँ परंपरागत व्यवस्था एवं रूढ़ियों के विरूद्ध विद्रोह कर स्वतंत्रता की माँग करती है। प्रसाद के उपन्यास में श्यामदुलारी, नन्दरानी आदि नारी-पात्र परंपरागत विचारधारा में बँधे हुई नजर आते है तथा घण्टी, गाला आदि नारी पात्रों में विद्रोह की चिनगारी नजर आती है। इस प्रकार प्रसाद ने अपने उपन्यास में नारी की परस्पर विरोधी विचारधाराओं का वास्तव प्रतिबिंब प्रस्तुत किया है।

प्रसाद के उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता का वास्तव चित्रण हुआ है। प्रसाद ने नारी मनोवृत्ति को ध्यान में रखते हुए उनके चरित्र का निर्माण किया है। इनके उपन्यास की कुछ नारियाँ सामान्य आचरण करके अपना जीवन बसर करती है, 'श्यामदुलारी', 'माधुरी', 'राजकुमारी' आदि नारी पात्र इसका उत्तम उदाहरण है। इन उपन्यासों में कुछ नारी-पात्र असामान्य मनोवैज्ञानिकता का शिकार हुए है। 'लतिका', 'घण्टी' आदि नारी पात्र इस मनोवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस प्रकार प्रसाद ने अपने उपन्यास में नारी मनोवैज्ञानिकता का बखुबी चित्रण किया है।

प्रसाद के समग्र नारी-पात्रों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होने अपने उपन्यास में 'आदर्श भारतीय नारी' के चरित्र का निर्माण किया है। प्रसाद के यह नारी पात्र संयम, त्याग एवं परोपकार आदि

गुणों द्वारा अपने व्यक्तित्व को निखारती है। नारी का चाहे कोई भी रूप हो हर एक नारी पात्र में प्रसाद 'आदर्शता' को स्थापित करने में सफल हुए है। इस प्रकार प्रसाद ने अपने उपन्यास में असाधारण नारी चरित्रों का निर्माण किया है।

प्रसाद ने 'नारी-जीवन' को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न चरित्र चित्रण पद्धतियों का प्रयोग किया है। उन्होने नारी के अंतः बाह्य चित्रण के द्वारा नारी जीवन पर प्रकाश डाला है। उन्होने अपने उपन्यास में नारी-चरित्र के अंतरंग चित्रण के लिए मनोवैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया है, जिसके द्वारा प्रसाद ने नारी मन का सूक्ष्म परिक्षण किया है। प्रसाद ने नारी मन में छुपी हुई अनेक उलझनों को खोलकर रख दिया है जिसमें उसके अन्तर्द्वन्द्व, अहम् भाव तथा उदात्तीकरण आदि प्रवृत्तियों का बखुबी चित्रण किया है। इस कारण उपन्यास में नारी-पात्रों का अंतरंग चित्रण एकदम पारदर्शी होकर हमारे सामने स्पष्ट रूप से उभरता है।

प्रसाद ने अपने उपन्यास में नारी के अंतरंग के साथ-ही-साथ उसके बाह्य रंग को भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। जिससे नारी पात्रों का परिचय एकदम प्रभावी बन पड़ा है। आकर्षक वेशभूषा के चित्रण से एक-एक नारी-पात्र सुंदर ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है। उनके उपन्यास में नारी-चरित्रों का उद्घाटन क्रिया-प्रतिक्रिया के माध्यम से भी प्रस्तुत हुआ है। जिसके द्वारा नारी-चरित्रों पर प्रकाश पड़ा है। प्रसाद ने नारी पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करने के लिए नाटकीय शैली का प्रयोग किया है।

प्रसाद ने अपने उपन्यास में प्रत्येक नारी को देख-परखकर वास्तव रूप में प्रस्तुत किया है। इस कारण उनके उपन्यास की हर नारी का अंतःबाह्य रूप सजीव बन पड़ा है। प्रत्येक लेखक अपने पात्रों में विशेषताओं को स्थापित करने की पूरी कोशिश करता है। प्रसाद ने भी अंतःबाह्य चित्रण से नारी गुणों की शृंखला प्रस्तुत की है।

जयशंकर प्रसाद का संपूर्ण साहित्य मानवी-जीवन को आदर्श की ओर ले जाने में सफल रहा है। प्रसाद अपने उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक नारी के समक्ष जीवनादर्श को रखते है। प्रसाद ने इन उपन्यासों में भारतीय नारी का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के नारी-पात्र हर स्थिति में आदर्श तत्त्वों को प्रस्थापित करने में सफल हुए है। प्रसाद ने अपने उपन्यास के माध्यम से आधुनिक-नारी को सही राह दिखाने का सफल प्रयास किया है। प्रसाद ने उपन्यास में सामान्य नारी से लेकर, अपने कृति से धर्म और समाज को एक उँचाई प्रदान करने वाली कर्तृत्वशील नारी चरित्रों का निर्माण किया है। इनके उपन्यास का हर नारी-पात्र किसी न किसी रूप में अपनी दुर्दम्य जिजीविषा से जिदंगी जीने का संदेश देते है। इनके उपन्यास की नारियाँ आज की नारी को हर स्थिति से जूझने की शक्ति प्रदान करती है। आधुनिक नारी अपनी आत्मिक उन्नति के साथ-साथ घर, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का भी संचालन करना चाहती है। जयशंकर प्रसाद के उपन्यास की नारी ऐसी दुर्दम्य इच्छा रखने वाली आधुनिक नारियों को एक स्वस्थ दिशा प्रदान करती है।

प्रसाद ने अपने समग्र साहित्य में अनेक महान नारी-चरित्रों का निर्माण किया है, जिनमें 'श्रद्धा', 'ईडा', 'कार्नेलिया' आदि नारियों का प्रमुखता से चित्रण हुआ है। वह अपने साहित्य में असामान्य कर्तृत्वशील नारियों के साथ ही सामान्य नारी का भी वास्तववादी उदाहरण प्रस्तुत करते है। इस प्रकार प्रसाद के उपन्यासों के नारी-पात्र अत्यंत सामान्य जीवन से उठकर कुछ अलग और विशेष स्थान निर्माण करने में सफल हुए है। उनकी यह सामान्य नारी आज की आधुनिक नारी के लिए प्रेरणास्रोत बन गई है। प्रसाद के सामान्य नारी-पात्रों से प्रेरित होकर आज की नारी अपनी सभी समस्याओं से जूझँते हुए ऊँचा सोचते हैं। आधुनिक नारी अपने जीवन को विकसित करते हुए धर्म और समाज को एक उन्नत स्थिति प्रदान करने की ओर अग्रेसर हो चुकी है।

नारी को वर्तमान स्थिति में पहुँचने के लिए अनेक उतार-चढ़ाओं से गुजरना पड़ा है। इन्हीं कारणों से उसके आचार-विचारों में बदलाव आना स्वाभाविक है; परंतु नारी अपनी समूची शक्तियों को संजोकर अच्छाई के साथ आदर्श समाज निर्माण में अपना योगदान दे रही है। यह प्रसाद साहित्य की उपादेयता है। प्रसाद की तरह अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी के इन्हीं विशेषताओं को पूर्णतः स्थापित किया है। इस प्रकार नारी सदा ही आदर और सम्मान की अधिकारिणी थी, आज भी है और सदा ही रहेगी। उसके जीवन का सूरज आदर्श की तेजस्वी किरणों को बिखेरते हुए सबको नई दृष्टि देगा !

उपलब्धियाँ

'जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन' का अनुशीलन करने के पश्चात् जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है वह सार रूप में इस प्रकार है -

1. जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों का अनुसंधान करना अपने आप में एक उपलब्धि है।
2. जयशंकर प्रसाद के विशाल साहित्य में उनके व्यक्तित्व की बहुमुखी प्रतिभा का प्रतिबिम्ब मिलता है।
3. जयशंकर प्रसाद के उपन्यास साहित्य में भारतीय नारी चित्रण की विशाल परंपरा के दर्शन होते हैं।
4. जयशंकर प्रसाद के उपन्यास में प्रेमचंद का यथार्थ तथा उनका आदर्श सहज दिखाई देता है।
5. विवेच्य उपन्यासों द्वारा प्रसाद ने नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है। इसमें नारी के पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा, वेश्या आदि अनेक रूपों का चित्रण हुआ है।

6. विवेच्य उपन्यासों में जयशंकर प्रसाद ने नारी के अंतःबाह्य स्वरूप को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करके उसके चरित्र पर प्रकाश डालाने में सफल हुए है।

7. जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन ने आज की आधुनिक नारी सम्मुख 'नारी-आदर्शता' को सफलतापूर्वक व्यक्त किया है।

8. इस शोध-प्रबंध में हिन्दी उपन्यास साहित्य की नारी चित्रण की विशाल परंपरा दृष्टिगोचर होती है।

अध्ययन की दिशाएँ

जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

1. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन
2. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित मनोविज्ञान
3. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न समस्याएँ
4. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में युगबोध
5. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना
6. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में समाज दर्शन
7. जयशंकर प्रसाद के उपन्यास और यथार्थवाद
8. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना
9. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में प्रेम का स्वरूप-विकास
10. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में जीवन-दर्शन
11. जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों का तात्विक अनुशीलन